महात्मा गांधी

केवल ईश्वर ही नरिपेक्ष सत्य को जानता है, इसीलयि मैंने प्रायः कहा है कि सत्य ही ईश्वर है। इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य, जो कि सीमति क्षमता वाला प्राणी है, नरिपेक्ष सत्य को नहीं जान सकता!

मेरा नशि्चति मत है कि निष्क्रयि प्रतरिोध कठोर-से-कठोर हृदय को भी पघिला सकता है। यह एक उत्तम और बड़ा ही कारगर उपचार है। यह परम शुद्ध शस्त्र है। यह दुर्बल मनुष्य का शस्त्र नहीं है। शारीरकि प्रतरिोध करने वाले की अपेक्षा नष्क्रियि प्रतरिोध करने वाले में कहीं ज्यादा साहस होना चाहयि!

मनुष्य सर्वशक्तमिान प्राणी नहीं है, इसलयि वह अपने पड़ोसी की सेवा करने में जगत की सेवा करता है। इस भावना का नाम स्वदेशी है। जो अपने नकिट के लोगों की सेवा छोड़कर दूरवालों की सेवा करने या लेने को दौड़ता है, वह स्वदेशी का भंग करता है!

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/essay-mahatma-gandhi